

|                                   |    |
|-----------------------------------|----|
| Слово о эль                       | 8  |
| Смеянство древних зорь            | 14 |
| Заведка                           | 16 |
| Гульба двух бурь, двух зорь ...   | 16 |
| Пламень леунностей влас ...       | 18 |
| Жарбог! Жарбог!                   | 18 |
| Тебе поем родун! ...              | 18 |
| Я видел ...                       | 20 |
| Перун                             | 22 |
| Трата и труд и трение ...         | 32 |
| Крылышкауя золотописьмом ...      | 34 |
| Времышыи-камышыи ...              | 34 |
| Стая ласточек ...                 | 36 |
| И чиряя чирков по челу озера ...  | 36 |
| Кому сказатеньки ...              | 38 |
| Любавица                          | 38 |
| Черный любирь                     | 42 |
| Червядь                           | 44 |
| В грезogaх-соногах ...            | 44 |
| Небистели, небистели ...          | 46 |
| Времири смеющиеся                 | 46 |
| Залюбясь влюбяюсь ...             | 50 |
| Плоскость X                       | 56 |
| Гонимый – кем, почему я знаю? ... | 60 |
| Людоши плескошь глухая ...        | 68 |
| Слоны бились бивнями так ...      | 68 |
| Перевертень                       | 70 |
| «Благовест уму» (Гоум ...)        | 74 |

|   |     |
|---|-----|
| Protokoll vom El                                | 9   |
| was ich bin                                     | 15  |
| erfahrendse                                     | 17  |
| zwo witter bamms, ent zwo ...                   | 17  |
| flammer monder alser haar ...                   | 19  |
| feurott go feurott!                             | 19  |
| kommerar tir neuerar ...                        | 19  |
| ei wie ...                                      | 21  |
| Perun   | 23  |
| presse arbeit reibung diese drei ...            | 33  |
| grashupfer                                      | 35  |
| zeitgeschöhn binsgeschülf ...                   | 35  |
| ein spalm lüfter ...                            | 37  |
| schrilf – die schrepfen kühlisen im see ...     | 37  |
| wie die kleine ach wie qualtig ...              | 39  |
| liebidonis                                      | 39  |
| schwarzer liebuster                             | 43  |
| laubeidach                                      | 45  |
| in fantasy-pantasy ...                          | 45  |
| himbellinster spymbellipsen ...                 | 47  |
| Allerleilach / Kopfankopf-Koppel                | 47  |
| Lieb-Satz                                       | 51  |
| M-Satz / mögliche Machtfragen                   | 57  |
| was jagt mich wer? wer mag mich was?            | 61  |
| gschwäzität maulaffnis tamisch ...              | 69  |
| zwei elefanten stießen im zahnkampf so bein ... | 69  |
| Rätsel, Nebel, Manie ...                        | 71  |
| getoengedroehn um den verstand                  | 79  |
| Oskar Pastior: Zu Art und Weise                 | 102 |
| Felix Philipp Ingold: Paßt ins Ohr              | 106 |
| Editorische Notiz                               | 111 |